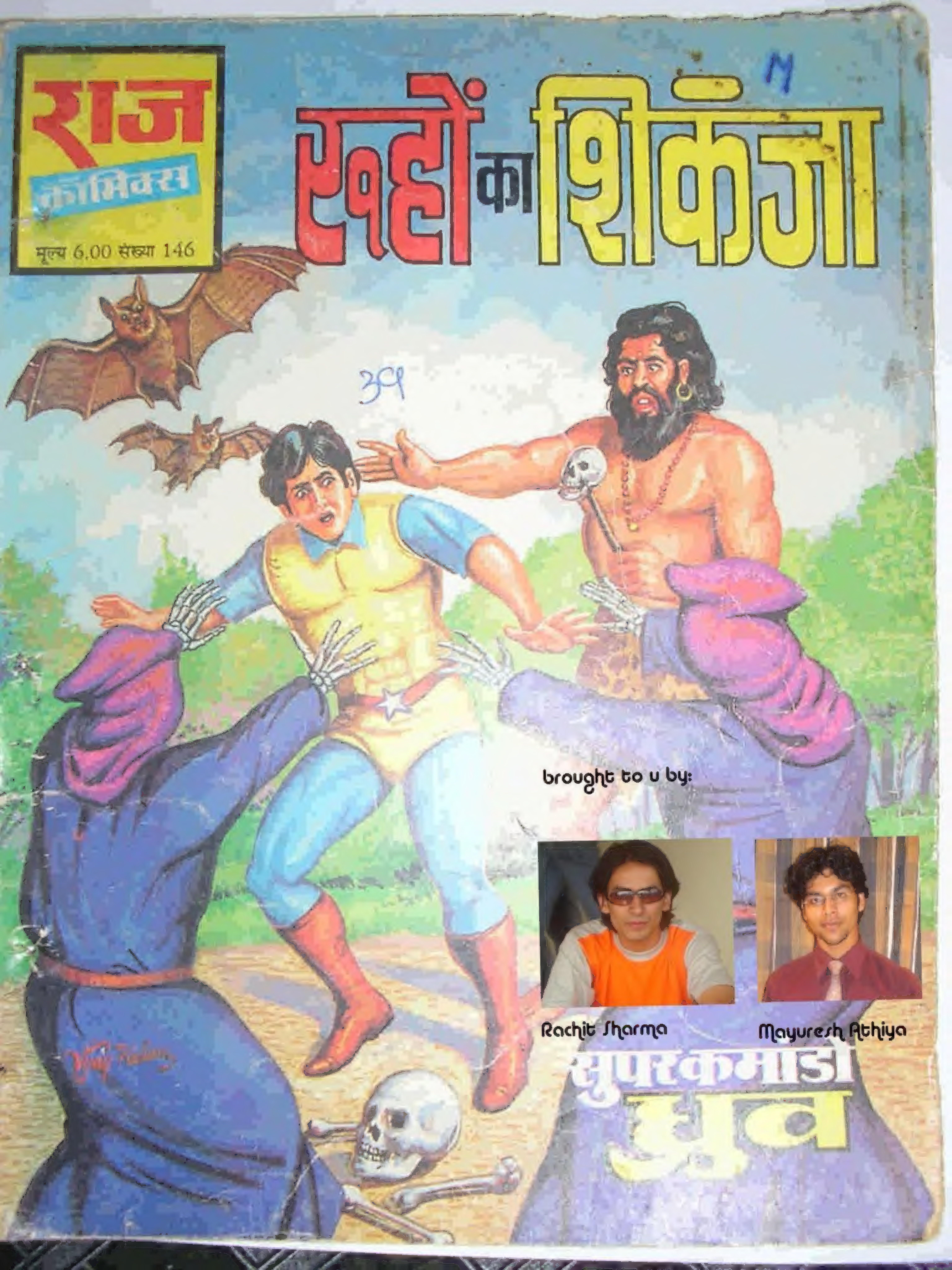

राज कॉमिक्स
मूल्य 6.00 संख्या 146
रूहों का शिकंजा
brought to u by:
Rachit Sharma
Mayuresh Athiya
सुपर कमांडो ध्रुव

दिन की रोशनी में हम जिन चीजों पर हंसते हैं, रात के सन्नाटे में वही चीजें हमारे होशो-हवास गुम कर देती हैं। ऐसे ही कुछ दृश्य जब रात के सन्नाटे में नजर आते हैं, तो फर्क करना मुश्किल हो जाता है कि हम सपने में जाग रहे हैं, या जागते हुए सपना देख रहे हैं।
रूहों का शिकंजा
कथा एवं चित्र - अनुपम सिन्हा
संपादक - मनीष चंद्र गुप्त
ऐसी घटनाएं किसी के भी साथ, कहीं पर भी घट सकती हैं। मापाल देश के राजभवन में लेटे ध्रुव के साथ भी!
मां! पिताजी!! आप!?
ले… लेकिन आप दोनों तो बरसों पहले जुपिटर सर्कस की आग में जलकर मर गए थे!!

यह कहना मुश्किल है कि भूत-प्रेत वास्तव में होते हैं, या नहीं। कई लोग तो बिना कभी देखे ही भूतों पर यकीन कर लेते हैं।
लेकिन कुछ लोगों को अपनी आँखों से भूत-प्रेत देखने के बावजूद भी उनपर यकीन नहीं आता।
तैयारी में कोई कमी तो नहीं है न, पवन? मानवेन्द्र जी हमारे पड़ोसी देश मापाल के राष्ट्रपति होने के साथ ही हमारे गहरे मित्र भी हैं।
आप निश्चिंत रहिए, प्रधान-मंत्री जी। मैंने कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी है!
विशाल जंबो जेट बड़ी सुगमता से हवाई-पट्टी पर उतर आया। विमान का दरवाजा खुला और मापाल के राष्ट्रपति मानवेन्द्र मुस्कराते हुए बाहर निकले।
भारत में आपका स्वागत है, माननीय राष्ट्रपति जी।
धन्यवाद, प्रधानमंत्री जी! मुझे भी भारत आकर ...
अचानक तभी – राष्ट्रपति मानवेन्द्र जी के नीचे उतरते पैर बुरी तरह से लड़खड़ाए। ...
...और वे सीढ़ियों पर लुढ़कते चले गए।
राष्ट्रपति मानवेन्द्र के साथ आए मापाली सेना के जनरल बिलाल और राष्ट्रपति के पर्सनल डॉक्टर थापा तेजी से उनकी तरफ लपके।
AIR
श्रीमान!
मैं देखता हूं!

तुरंत ही- एयरपोर्ट की एंबुलेंस घटनास्थल पर आ लगी।
चिंता की बात नहीं है। दिल की धड़कन एकदम सामान्य है!
इनको तुरंत अस्पताल पहुंचाना होगा! एक-एक क्षण कीमती है!
आप एंबुलेंस में इनके साथ ही आइए, डॉ० थापा!
अस्पताल- कर्मियों ने एक पल भी नष्ट नहीं किया।
चिंता की कोई बात नहीं है, सर! डॉ० थापा बहुत काबिल डॉक्टर हैं!
वे राष्ट्रपति जी को कुछ भी नहीं होने देंगे!
लेकिन एकदम से राष्ट्रपति जी को ऐसा क्या हो गया?
सवाल सुनते ही जनरल बिलाल का चेहरा गंभीर हो गया।
राष्ट्रपति जी की यह हालत उसी समस्या के कारण है जिसको सुलझाने के लिए वे मदद मांगने आप के पास आए हैं!
हम जो भी कर सकते हैं, जरूर करेंगे! परंतु समस्या क्या है?
आत्माएं! राष्ट्रपति जी के अनुसार उनको उनके मृत संबंधियों की आत्माएं तंग करती हैं! वे कई हफ्तों से ठीक तरह से नहीं सो सके हैं!
नींद के इंजेक्शन भी अब उनपर ज्यादा असर नहीं करते!
आज भी शायद वे नींद की कमी से ही बेहोश हो गए थे!
उनकी इस हालत के कारण ही मैं खुद उनका अंगरक्षक बनकर साथ आया हूं!
हूं! आइए! हम भी अस्पताल चलते हैं!
और फिर- अस्पताल के एकांत में-
...तो जनरल बिलाल ने तुमको मेरी समस्या के बारे में पहले ही बता दिया है!
मैं यहां पर राष्ट्रपति नहीं- बल्कि एक दोस्त की हैसियत से आया हूं!
मैं अपनी शक्ति भर तुम्हारी हर मदद करूंगा!
तुम मुझे पूरी बात विस्तार से बताओ, मानवेन्द्र!
तो सुनो!

लगभग दो महीने पहले की बात है। एक रात, जब मैं देर तक कुछ अर्जेन्ट काम निपटा रहा था, तभी मेरे पीछे से एक आवाज आई।
मानू, सुनो!
मुझे मेरी पत्नी रत्ना के अलावा और कोई इस नाम से नहीं बुलाता।
मैं चौंक कर घूमा। मेरे सामने वास्तव में मेरी पत्नी खड़ी थी।
?
और तुम जानते ही हो कि मेरी पत्नी को मरे हुए साल भर हो चुका है।
मेरी जुबान जैसे लकड़ी की हो गई थी!
रत्ना! तुम... तुम...!
वह सिर्फ मुस्कराई। और मुझे अपने पास आने का इशारा करती हुई वह बालकनी की तरफ बढ़ी।
वह बिल्कुल असली लग रही थी। मैं पागलों की तरह उसके पीछे लपका। वह तबतक दरवाजे से बाहर निकल चुकी थी।
मैं बालकनी पर जब पहुंचा, तो जो कुछ मैंने देखा, वह मुझे पागल बना देने के लिए काफी था। रत्ना धीरे-धीरे हवा पर चलती हुई मुझसे दूर जा रही थी।
उसकी आकृति भी, न जाने क्यों, धुंधली पड़ती जा रही थी।
मेरा सिर चकराने लगा। लड़खड़ाते कदमों से मैं कमरे में आने के लिए वापस मुड़ा...
...और डर के मारे मेरे पैर जड़ हो गए।

कमरे में, मेरी कुर्सी पर बैठे हुए, बरसों पहले मर चुके मेरे पिता, मुझे अपने पास आने का इशारा कर रहे थे।
मेरा पहले से चकराता सिर और ज्यादा चकराने लगा। उसके बाद क्या हुआ, मुझे याद नहीं!
जब मुझे होश आया तो मेरा बदन बुखार से तप रहा था। मेरे पर्सनल डॉक्टर, डॉ. थापा की काबिल देखरेख से मैं जल्दी ही ठीक हो गया।
लेकिन उसके बाद से यह लगभग रोज का वाकया हो गया। मेरे अंगरक्षक मेरे कक्ष में ही सोने लगे।
पूरी नींद न मिल पाने के कारण मेरी दिमागी हालत भी डांवाडोल होने लगी। मैं चिड़चिड़ा हो गया।
लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि वे आकृतियां उनको नहीं दिखाई पड़ती थीं।
पूरे देश में तो यह अफवाह फैली है, कि मैं पागल हो गया हूं।
भापाल में स्थिति विस्फोटक है। किसी भी वक्त देश में संवैधानिक संकट उत्पन्न हो सकता है। अब तक तो जनरल बिलाल ने सेना की मदद से स्थिति संभाली हुई है लेकिन क्रांति का बिगुल कभी भी बज सकता है।
समझा। अब तुम यह बताओ कि मैं इसमें तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूं?

पर मुझे यकीन नहीं है! मुझे पूरा विश्वास है कि यह सब मेरे खिलाफ रचे गए किसी षड्यंत्र का एक हिस्सा है!
मुझे एक ऐसा व्यक्ति चाहिए जो षड्यंत्रकारियों को बेनकाब करके मेरे देश को इस दलदल से निकाल सके!
लगता है कि तुम ऐसे किसी खास आदमी के बारे में पहले से ही सोचकर आए हो? कौन है वह सुपरमैन?
वही वन मैन आर्मी, सुपर कमांडो ध्रुव!...
...जिसने अभी हाल में ही हिमालय पर दुश्मन सेना का अकेले ही सफाया कर दिया था!
मैं भी ध्रुव के ही बारे में सोच रहा था! वह ऐसे कामों के लिए बिल्कुल उपयुक्त व्यक्ति है!
मेरे ख्याल से मेरा कहना वह कभी नहीं टालेगा! मैं उसको अभी बुलवाता हूं!
और ध्रुव ने अपने प्रधान मंत्री का कहना नहीं टाला। भारत की यात्रा के बाद जब राष्ट्रपति मानवेन्द्र मापाल पहुंचे तो ध्रुव उनके साथ था।
आओ, ध्रुव! यह राजभवन है, यानि मापाल का राष्ट्रपति-भवन! ऊपर की मंजिल पर दाहिनी तरफ हमारा निवास-स्थान है!
बहुत ही सुंदर है राजभवन!
आओ! अब अंदर चलें!
यह 'गेस्ट-क्वार्टर' है! तुम यहां नहा-धोकर तैयार हो लो!
बाकी बातें हम डिनर पर करेंगे!
जैसी आपकी इच्छा, श्रीमान!

रात को – डिनर के बाद, जब ध्रुव और राष्ट्रपति अकेले रह गए, तब –
श्रीमान! आपने इस काम के लिए भारत से सहायता क्यों मांगी? यह काम तो आपकी खुफिया एजेंसी भी कर सकती थी!
हां! लेकिन षडयंत्रकारियों की खुफिया एजेंसी में कितनी गहरी घुसपैठ है, यह हमको नहीं पता। इसीलिए हम उनपर भरोसा नहीं कर सकते!
यह तो स्पष्ट है, कि अगर यह षडयंत्र है, तो यह आपको राष्ट्रपति पद से हटाने के लिए है। आपके हट जाने से सबसे ज्यादा फायदा किसको होगा?
मेरे ख्याल से सबसे ज्यादा फायदा हमारी विरोधी पार्टी के नेता नागफन भंडारी को होगा!
कैसे?
देखो, अगले चुनाव कुछ ही महीनों में होने वाले हैं। अगर जनता को शक हो गया कि मेरा दिमाग खराब हो गया है तो मेरी पार्टी चुनाव हार जाएगी!...
...और हमारी प्रमुख विरोधी पार्टी चुनाव आसानी से जीत जाएगी!
और नागफन भंडारी उस पार्टी का अध्यक्ष होने के कारण राष्ट्रपति बन जाएगा।
तो अब हमारा पहला काम...
मानू!
एक सर्द आवाज पीछे से उभरी।
राष्ट्रपति आवाज सुनते ही बुरी तरह से भयभीत हो उठे।
वही है! व...वही है मेरी पत्नी! देखो, ध्रुव! देखो!
आओ, मानू! मेरे पास आ जाओ!
आवाज तो मैं भी सुन रहा हूं! पर कोई दिखाई नहीं पड़ रहा है!
दिखाई पड़ तो रही है! देखो, वह उस गोल टेबल के पास खड़ी है! देखो! दिखी?
कहां, श्रीमान, कहां? मुझे तो कुछ नहीं दिख रहा है!
यह आपके मन का वहम है!

तभी, गोल टेबल एक झटके से गिर गई।
यह क्या? टेबल कैसे गिर गई?
वही थी। वही थी!! वही थी!
आह! मुझे...मुझे बचा लो! बचा लो! वह मुझे अपने साथ...ऽऽ!
श्रीमान!
लेकिन राष्ट्रपति मानवेन्द्र बेहोश हो चुके थे।
राष्ट्रपति जी तो बेहोश हो गए! मुझे तुरंत कॉल बेल बजाकर मदद...
अरे!
दरवाजे के बाहर कोई खड़ा हुआ है! यानि कोई हमारी ...
...जासूसी कर रहा है!
ध्रुव ने एक झटके से दरवाजा खोला।
वह भाग रहा है! लगता है उसने मेरे आने की आहट सुन ली है!
रुक जाओ! वरना...
उस व्यक्ति ने पलभर के लिए पीछे मुड़कर देखा
और उसके हाथ की ट्रे से दूध से भरे गिलास नीचे आ गिरे।
उसका अगला कदम जमीन पर गिरे चिकने दूध पर पड़ा और
...उसका पैर फिसला।
और उसका शरीर मुंडेर पार करता हुआ पथरीले फर्श पर आ गिरा।
TTSSSSS

तभी पूरा कॉरिडोर भागते कदमों की आहट से भर गया।
क्या हुआ, ध्रुव?
जनरल चिलाल!
आप तुरंत डॉ॰ थापा को बुलवाइए! राष्ट्रपतिजी अपने कक्ष में बेहोश पड़े हुए हैं! उनको फिर से आत्माएं दिखाई पड़ी थीं।
सिपाही, डॉ॰ थापा को नीचे से तुरंत बुलाकर लाओ!
जो आज्ञा, सर!
नीचे से? क्या डॉ॰ थापा, यहीं, राजभवन में ही रहते हैं?
हां! जबसे राष्ट्रपति जी की तबियत खराब हुई है, तब से उन्होंने राष्ट्रपति जी के नजदीक रहना ही तय किया है! पर अभी चीख़ा कौन था?
यह!
माई गॉड! यह तो मानसुन है! राष्ट्रपति जी का निजी सचिव! लेकिन यह गिरा कैसे?
यह शायद हमपर जासूसी कर रहा था! जब मैं बाहर आया तो यह मुझे देखकर भागा!
इसके हाथ में दूध के दो गिलास थे। वे इसके हाथ से छूट गए और यह उसी दूध पर फिसलकर नीचे आ गिरा।
ओह! लेकिन यह तो इसका रोज का नियम था!
राष्ट्रपति जी को यह रोज रात दूध देने आता था और फिर उनकी इजाजत लेकर अपने घर जाता था!
यह डर कर भागा तो जरूर होगा! लेकिन तुमको देखकर नहीं! बल्कि कुछ और देखकर!
आपका मतलब है कि... आत्माएं देखकर!!
ओ! आइए, राष्ट्रपति को देखने चलें!

डॉ॰ थापा
इतना ही पता है!
बारे में कैसे जानते

में नहीं है।
पता नहीं था!
राष्ट्रपति जी का सचिव
टेबल कैसे गिर गई।
कि डॉ॰ थापा, राष्ट्रपति जी के दुश्मन नागफन भलारी के पुराने दोस्त हैं।
कल इस नागफन भलारी से मिलना ही पड़ेगा!

लेकिन नागफन भंडारी का नाम उसके माता-पिता ने काफी सोच-समझ कर रखा था, क्योंकि अपने दिन...
...इसमें मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूं? कहो तो कुछ पागलखानों के पते लिखकर दे दूं!
आपको यह कहते शर्म आनी चाहिए, भंडारी जी!
अपने देश के राष्ट्रपति को पागल कहकर आप अपने देश का अपमान कर रहे हैं!
बेटे, पागल को पागल नहीं तो और क्या कहेंगे?
फिर वह पागल चाहे एक आम व्यक्ति हो, या कहीं का राष्ट्रपति!
भापाल को अब नागफन भंडारी जैसा सजग राष्ट्रपति चाहिए!
मानवेन्द्र जैसा पागल राष्ट्रपति नहीं, जिसको भूत-प्रेत दिखाई पड़ते हैं!
तो सुन लो, भंडारी! मैं यहां तुम्हारा खेल खत्म करने ही आया हूं!
अब तुम अपने दिन गिनने शुरू कर दो!
यह लड़का खतरनाक है, दादा! यह जो कह रहा है वह कर भी सकता है।
और मैं यह बिल्कुल भी नहीं चाहता हूं कि...
...मानवेन्द्र को पागल बनाने की प्रक्रिया में कोई विघ्न पड़े!
इसीलिए मैंने इस लड़के का इंतजाम पहले से ही कर दिया है!
इस षड्यन्त्र से बेखबर ध्रुव की मोटर साइकल राजभवन की तरफ उड़ी जा रही थी।
अब सबसे पहला काम डॉ० थापा की जांच करना है!
और अगर नागफन भंडारी और डॉ० थापा में कोई संबंध है, तो उसको तोड़ना पड़ेगा!
नथवल! वह आ रहा है!

तो मैं भी तैयार हूं!
हल्का सा एक धक्का लगा और एक चट्टान नीचे की ओर गिरने लगी।
ध्रुव ने गड़गड़ाहट सुन कर ऊपर देखा। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।
एक विशाल चट्टान ठीक ध्रुव की तरफ बढ़ रही थी। ध्रुव के पास सिर्फ एक क्षण का समय था।
और ध्रुव ने वह क्षण नहीं गंवाया।
धड़ाक
आज तो इस उभरी चट्टान ने ही बचाया!
हा, हा! शाबास, नयबल! एक ही झटके में छोकरे को भगवान के दर्शन करा दिए!
अपना वार कभी खाली नहीं जाता, लप्पू! आओ, भंडारी दादा को यह खबर दे आएं कि हम...
...नाकामयाब रहे!
तुम!!
तू... तुम बच कैसे गए?

मैं अभी चाकू से इसकी आंत ..आह!
चाकू से बच्चे नहीं खेला करते!..
...वरना हाथ कट जाता है! इस बेल्ट की तरह!
म- मेरी पैंट सरक जाएगी! और मैं नीचे कुछ नहीं पहने हुए हूं!
तो शरीफ आदमी की तरह पैंट पकड़े रहना!
ढिशुं
आज सुबह मैं कसरत नहीं कर पाया था, उसकी कमी पूरी हो गई!
धड़ाक
और अब उसकी धुंधली आंखें देखने योग्य हुईं तो तीनों गुंडे दूर जा चुके थे।
मोटर साइकल का तो चूरा बन गया! अब तो, बेटा ध्रुव, टैक्सी मिलने तक पैदल मार्च करना पड़ेगा!
और आधे घंटे बाद
अरे, ध्रुव! यह क्या हालत बनाकर आ रहे हो? और तुम्हारी मोटर साइकल कहां है?
शायद यहां के कबाड़ी बाज़ार में!

डॉ॰ थापा कहां हैं?
अपने क्वार्टर में!
उनसे कुछ दवाई ले लूं, तो तबियत ठीक हो जाए।
डॉ॰ थापा अपने कमरे में किसी गहरी चिंता में डूबे थे।
क्या मैं अंदर आ सकता हूं, डॉ॰ थापा?
आओ, ध्रुव, आओ! इधर कैसे चले आए?
मैं राष्ट्रपति जी की तबियत के बारे में पूछने आया था! कैसे हैं वे अब?
पहले से बेहतर हैं! लेकिन अगर उनको फिर कोई आत्मा दिखाई पड़ी, तो वे फिर वापस उसी हालत में पहुंच जाएंगे।
एक बात बताइए, डॉ॰ थापा! इन आत्माओं को राष्ट्रपति जी के अलावा क्या और किसी ने कभी देखा है?
नहीं!
यानि ये आत्माएं उनके अपने दिमाग की उपज भी हो सकती हैं।
ऐसा किसी दवाई से संभव है क्या?
हूं! तो अब एक आखिरी प्रश्न का उत्तर दीजिए, डॉ॰ थापा!
क्या बकवास कर रहे हो तुम?

मैं तुम्हारी बदतमीजी का जवाब अभी भी दे सकता हूं! लेकिन इस वक्त तुम हमारे मेहमान हो।
किसी अन्य
राष्ट्रपति जी अभी भी सो रहे हैं, ध्रुव! तुम भी थोड़ा आराम कर लो तो ठीक रहेगा!
राष्ट्रपति जी के साथ ही है! मुझे पूरा यकीन है...
ध्रुव!
नज़र रखूंगा!
में घुस गई।

काबू न रख सका।
जा रहे हो?
और पिता श्री।
यह क्या?
के पास आ रहे हैं!!

हटो रास्ते से जनरल।
...वरना वे गायब हो जाएंगे।
माँ, रुक जाओ। रुक जाओ।
ये परछाइयां उसको किस तरफ ले जा रही है। उसको होश तब आया जब वे दोनों -
गायब हो गए। लेकिन कहां?
ध्रुव पागलों की तरह दौड़ रहा था। लेकिन फासला उतना का उतना ही था।
ध्रुव अभी यह सोच भी न पाया
?
क...कौन हो तुम सब?
मुझे जाने दो! जाने दो!

लेकिन वे ध्रुव तक पहुंचने से पहले ही गायब हो गईं।
आत्माएं नहीं थीं। यह तो नजरों का धोखा था!
बालक, मैं पिछले एक सौ पचास सालों से हिमालय पर कपाल-साधना कर रहा था! और इस साधना में तो मेरी आत्माओं
आत्माएं तो मेरी दोस्त हैं! लेकिन बुरी आत्माओं का मैं
रहे खतरे के बारे में बताया तो मैं पलभर भी नहीं रुका!
हा हा हा हा!

राजभवन में भारी चहल-पहल थी।
ध्रुव! तुम भागते हुए कहां गए थे?
और जनरल बिलाल कहां है?
जनरल बिलाल!
वे तो मेरे साथ नहीं गए थे!
तुम्हारे साथ नहीं! लेकिन वे तुम्हारे पीछे ही गए थे। और अभी तक वापस नहीं लौटे।
अब वह शायद कभी वापस नहीं आएगा! दुष्ट आत्माएं किसी को नहीं छोड़तीं!
अगर मैं वक्त पर न पहुंच गया होता तो यह बालक भी वापस नहीं आ पाता!
तुम कौन हो, भई? और यहां कैसे घुस आए? यह राष्ट्रपति भवन है, कोई धर्मशाला नहीं!
इन को मैं लेकर आया हूं, डॉ. थापा!
मैंने खुद अपनी आंखों से आत्माओं को देखा है। अपने मृत माता-पिता की आत्माओं से बात की है!
अब तो न चाहते हुए भी मुझे भूत प्रेत पर यकीन हो गया है!
और इन आत्माओं के सामने हमारा आधुनिक विज्ञान बेकार है!

समय नष्ट करना उचित नहीं है! मुझे शीघ्रता से राष्ट्रपति के पास ले चलो!
लेकिन वे अभी बीमार..
चुप रहो!
कापालिक का रौद्र रूप देखकर डॉ० थापा की हिम्मत जवाब दे गई।
आओ, बालक!
मुझे यहां पर दुष्ट आत्माओं का आभास हो रहा है!
वे इस तरफ हैं!
आश्चर्य! यह तो अपने आप राष्ट्रपति जी के कक्ष की तरफ आ रहा है!
आप तो चमत्कारी हैं, बाबा!
यही राष्ट्रपति जी का कमरा है!
शांत रहिए, डॉ० थापा!
इसको शांत करो, बालक!
इसको भस्म कर दूंगा।

यह क्या हो रहा है? कौन हो तुम?
ये एक महान कापालिक हैं! ये उन सारी दुष्ट आत्माओं को कैद कर लेंगे, जो आपके संबंधियों का रूप धरकर आपको तंग करती हैं!
तुमको इन बातों पर कब से विश्वास हो गया? तुम...
यह तुम बोल रहे हो, ध्रुव?
तभी कापालिक ने चीखकर अपना अस्थिदंड उठाया।
वह है!
और सामने एक स्त्री प्रगट हो गई।
और वह है!
मेरी पत्नी, और मेरे पिता!?
तुम्हारा खेल खत्म हुआ, गंदी आत्माओ! अब तुम अपने भयंकर अंजाम के लिए तैयार हो जाओ!
लेकिन वे दोनों रहस्यमय आकृतियां सिर्फ हंसीं।
हा हा हा हा हा

और कापालिक चीखकर दूर आ गिरा–
आईईई
कापालिक क्रोध से पागल हो गया।
तुम्हारी ये हिम्मत! मैं अभी तुमको भस्म...
मुड़े हुए हाथों से रोशनी की एक और पीली किरण निकली।
आऊ!
इस बार का वार और ज्यादा ताकतवर था।
दोनों आकृतियां फिर से देखीं, और गायब हो गयीं।
ये दोनों तो गायब हो रहे हैं।
उससे मुझको वह शक्ति प्राप्त होगी, जिससे ये आत्माएं मेरे वश में आ जाएंगी। कहिए, आप लोग राजी हैं?
ये आत्माएं बहुत शक्तिशाली हैं!
मैं इस तरह से इनको वश में नहीं कर सकता।
इसके लिए मुझे ... राष्ट्रपति के साथ, एकांत में एक विशेष अनुष्ठान करना पड़ेगा।
हां, हां। मैं एक दम तैयार हूं।

तुम्हारा क्या कहना है, बालक?
मुझे तो सिर्फ इतना ही कहना है कि...
अब तुम्हारा खेल खत्म हो गया, कापालिक!
कापालिक पल भर में सारी स्थिति समझ गया -
तो यह ले!
आह!
लेकिन ध्रुव अब इस नाटक को और आगे बढ़ने देने के मूड में नहीं था -
ये घूंसा है मेरे माता-पिता की असली आत्माओं से खिलवाड़ करने के लिए!
और ये है शण्ड्पति जी को पागल घोषित करने की साजिश के लिए!

और इन दो घूंसों के साथ...
...एक घूंसा बिल्कुल मुफ्त!
हाय
अब माफी मांग राष्ट्रपति जी से!
और अपने गंदे मुंह से बता कि तू कौन है?
?
लेकिन ध्रुव यहीं पर गलती कर गया
क्योंकि राष्ट्रपति गजेन्द्र के पैरों पर गिरा कापालिक, उठा -
हाऽऽऽऽऽऽऽ
उसने अपनी कमर की खाल से एक लंबा चाकू निकाला।
और
अब अगर इंच भर भी हरकत की तो राष्ट्रपति का गला रेत दूंगा!
!
तुम्हारी यह मजाल?
तूने राष्ट्रपति जी को हाथ लगाया?
गुस्से से भरे डॉ॰ थापा आगे बढ़े।
और राष्ट्रपति जी चीख उठे। उनके गले से खून की एक पतली लकीर नीचे की ओर बह चली -

जनरल विल्लाल!
आकृतियां थीं!
वाह!

यानि तीन आयामी आकृतियां? नहीं। ये तो बिल्कुल असली लग रहे हैं!
अच्छा!
हाहा! ये प्रोजेक्टर
सकते हैं!
इनको इस
वाह प्रोफेसर, लेकिन आपका यह आविष्कार अगर दुश्मनों के हाथ में पड़ गया तो वे भी ऐसे कई प्रोजेक्टर बना डालेंगे!
कभी नहीं! कभी नहीं!
अंदर एक ऐसा बल्ब फिट किया है, जो इनको खोलते ही फट पड़ेगा! और पूरे प्रोजेक्टर के चिथड़े उड़ जाएंगे।
और दुर्भाग्यवश, प्रोजेक्टरों के

...मेरी स्कीम राष्ट्रपति को उनके मरे हुए संबंधियों की तीन आयामी आकृतियां दिखा-दिखा कर पागल घोषित करा देने की थी। ताकि देश में संवैधानिक संकट उत्पन्न हो जाए, और मैं सेना के जरिए सत्ता संभाल लूं!
इस काम को अंजाम देने के लिए मैंने इस कमरे में कुछ प्रोजेक्टर फिट कर दिए।
और उनमें राष्ट्रपति की पत्नी और पिता का मेकअप किए एक्टरों की फ़िल्में भर दीं।
राष्ट्रपति का निजी सचिव मानसून मेरा आदमी था। वह कमरे के बाहर खड़ा होकर रिमोट कंट्रोल के जरिए तीन आयामी आकृतियों को भूत बनाकर पेश करता रहता था!
एक मिनट, जनरल! कल राष्ट्रपति जी की पत्नी की आकृति, जो उनको दिख रही थी, वह मुझे क्यों नहीं दिखी?
इस प्रोजेक्टर से कई अलग-अलग तरह की आकृतियां प्रोजेक्ट की जा सकती हैं।
उनमें से कुछ खास किस्म की आकृतियों को, एक स्पेशल शीशे से ही देखा जा सकता है! उन स्पेशल शीशों को मैंने राष्ट्रपति के चश्मे में फिट करवा दिया था! इसीलिए वे आकृतियां सिर्फ उनको ही दिखती थीं!
ओह! तो ये बात थी!!
बोलते जाओ, जनरल! बोलते जाओ!
गड़बड़ी मानसून की मौत के बाद से शुरू हुई! मेरे पास और कोई भरोसे लायक आदमी नहीं था!
इसीलिए मैंने फिर एक स्कीम बनाई!
जिसका खास मोहरा था — ध्रुव!

इसके कमरे में रखी इसके असली माँ-बाप की फोटो के अनुसार, मैंने एक्टरों का मेकअप करके कुछ रीलें तैयार कीं। और फिर, इसके कमरे में प्रोजेक्टर फिट करके, उनमें वह रीलें भर दीं!
फिर जैसा मैंने सोचा था, वैसा ही हुआ! ध्रुव अपने माँ-बाप की आकृतियों का पीछा करता-करता वहां तक आ गया, जहां पर मैं कापालिक के भेष में इसका पहले से इंतजार कर रहा था!
इसको अपने प्रभाव में लेकर मैं यहां तक पहुंच गया! इस अस्थिदंड में छिपे रिमोट कंट्रोल के जरिए मैंने इस कमरे वाला सारा नाटक किया!
और वह अनुष्ठान?
अनुष्ठान तो सिर्फ एक बहाना था! दरअसल मुझे राष्ट्रपति को एकांत में दबोचने का मौका चाहिए था! ताकि मैं उसकी हत्या करके गायब हो जाऊं!
लेकिन यह काम तो तुम कभी भी कर सकते थे! क्योंकि राष्ट्रपति कक्ष पर तो तुम खुद ही पहरा देते थे!
यह इतना आसान नहीं था! डॉ. थापा, अक्सर पूरी रात, राष्ट्रपति कक्ष में ही रहते थे। दिन में यह काम करना असंभव था।
...और मैं यह बिल्कुल भी नहीं चाहता था कि किसी को भी, जनरल बिलाल पर रत्ती भर भी शक पड़े!
राष्ट्रपति की हत्या के बाद लोग आत्माओं पर शक करते रह जाते! अगर किसी को कापालिक पर शक होता भी तो कापालिक उनको कभी न मिलता!...

..क्योंकि कापालिक तब तक वापस जनरल बिलाल बन चुका होता।
वाह! तुमने मेरी हत्या की कोशिश तो ज़रूर की, बिलाल!..
...लेकिन तुम ने जो स्कीम बनाई, वह वाकई काबिले तारीफ थी।
और फिर बाद में-
..तुमने सिर्फ मुझपर ही नहीं, बल्कि पूरे शासन पर अपने एहसानों का बोझ लाद दिया है, ध्रुव!
एहसान कैसा, श्रीमान? यह तो मेरा कर्तव्य था!
जो भी कह लो! लेकिन तुमने दो ही दिनों में यह सब कैसे कर दिखाया?
शक तो मुझे पहले दिन ही हो गया था, जब आपके कमरे की गोल टेबल अपने आप पलट गई थी!
जब मैंने उसके पाए में एक धागा बंधा देखा, तो मैं समझ गया कि किसी ने बाहर से डोरी खींचकर टेबल को पलटाया है!...
...बाहर आकर, मानसुन को भागते देखकर मेरा शक और पक्का हो गया!
...मैं समझ गया कि इन आत्माओं के पीछे आदमियों का ही हाथ है! शुरू में मेरा सारा शक नागफन भंडारी और डॉ॰ थापा पर था! मेरा ख्याल यह था, कि चूंकि आत्माएं सिर्फ आप को ही दिखती हैं, इसलिए वे किसी दवा का नतीजा भी हो सकती हैं!...
..और ऐसी दवाई आपको सिर्फ डॉ॰ थापा ही दे सकते थे!...
...लेकिन कल रात को जब मुझे भी आत्माएं दिखाई पड़ीं, तो मेरा विचार एक झटके में बदल गया। मैंने तय किया कि मैं भी ऐसा दिखावा करूं, जैसे मुझे भी आत्माओं पर यकीन हो गया है!...

...मेरी योजना सफल भी रही! कापालिक के रूप में जनरल बिलाल ने यही समझा, कि मैं उस के चक्कर में फंस गया हूं!...
...लेकिन असलियत यह थी कि जनरल बिलाल मेरे चक्कर में फंस रहा था!
जनरल बिलाल को तुमने पहचाना कैसे? मैं और डॉ॰ थापा तो उसको बिल्कुल नहीं पहचान पाए!
तुरंत तो उसको मैं भी नहीं पहचान पाया था! क्योंकि जहां पर मैंने उसको कापालिक के रूप में देखा था, वहां काफी अंधेरा था!...
...और उसने मेकअप भी काफी अच्छा किया था!...
...लेकिन जब मैंने उसको राजभवन की रोशनी में देखा, तो पाया कि कापालिक के माथे की, ऊपर वाली खाल का रंग, बाकी चेहरे से काफी गोरा था! ठीक वैसा ही जैसा धूप में हमेशा टोप पहनने से हो जाता है!...
...यह गौर करते ही, मैं एक झटके में उसको पहचान गया!
मेरा रहा-सहा शक तब दूर हो गया, जब वह राजभवन में घुसकर, बगैर रास्ता बताए, सीधे आप के कक्ष तक पहुंच गया!
यह सब तो स्पष्ट है! पर एक बात मुझको अब तक समझ में नहीं आई!
कौन सी, श्रीमान?
कि वह भारी मूर्ति अपने आप कापालिक के हाथ पर कैसे गिर गई? मुझे तो ऐसा लगा जैसे किसी ने उसको गिराया था!
लेकिन किसने?
इस सवाल का ध्रुव के पास कोई जवाब नहीं था।
समाप्त